UGC Approved Journal No - 47168, 49367
ISSN 2231 – 413X

SP
A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal
http://shodhprerak.blogspot.com

Vol. - VII, Issue - 2, April 2017

Chief Editor :
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors :
Reeta Yadav
Pradeep Kumar

CONTENTS

- *बुद्धमान का 'रुद्रभामल' में भगवान बुद्ध* — 1-3
  अवधेश कुमार चौबे, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष बौद्ध दर्शन विभाग, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर, लखनऊ-226010
- संगीत के क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता एवं विभिन्न क्षेत्र — 4-7
  डॉ. मनीष कुमार वर्मा, पूर्व शोध छात्र, गायन विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- कथकली के संगीत एवं मंच व्यवस्था में निहित अलौकिकता — 8-9
  स्वाती त्रिपाठी, शोध छात्र, नृत्य कला विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- समकालीन महिला कथाकारों की कहानियों में नारी चेतना — 10-11
  राजीव कुमार सिंह, पूर्व शोध छात्र हिन्दी, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
- पारिस्थितिकी तंत्रः एक अवलोकन — 12-15
  प्रदीप कुमार उपाध्याय, वरिष्ठ शोध छात्र, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- पौराणिक शब्द प्रतिमांकन में श्रव्य नहीं दृष्टव्य — 16-21
  श्यामजीत यादव, शोधार्थी दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
- गाँधीवाद : एक पुनर्दृष्टि — 22-26
  डॉ. अरविन्द कुमार, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, महामाया राजकीय महाविद्यालय, कौशाम्बी
- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की काव्य भाषा — 27-31
  आशा सिंह यादव, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' : विचारधारा एवं विचारदृष्टि — 32-36
  शिव प्रताप सिंह, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
- गुप्तकाल में दुर्ग एवं राजप्रसादो का महत्व : एक अवलोकन — 37-39
  धर्मेन्द्र यादव, शोध छात्र, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
- एक वैश्विक चुनौती के रुप में आतंकवाद — 40-46
  महाबीर कुमार, शोध छात्र, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, वाराणसी।
- गाँधी का ''ग्राम स्वराज्य'' : ग्रामीण सशक्तिकरण का आधार — 47-50
  सुरजन यादव, शोध छात्र, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
- मध्यकालीन संगीत विकास में शर्की साम्राज्य का सांगीतिक योगदान — 51-54
  रिंकी सिंह, शोध छात्रा, वाद्य संगीत विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- वृद्धावस्था- स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्त — 55-57
  डॉ. चन्द्रशेखर पाण्डेय, रीडर, मौलिक सिद्धान्त विभाग, राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय वाराणसी।

- डॉ. राममनोहर लोहिया एवं दीनदयाल उपाध्याय का मार्क्सवाद 302-305
  डॉ. शिवाकांत मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र), देवेन्द्र पी.जी. कॉलेज, बिल्थरा रोड, बलिया
- मिर्जा राजा जयसिंह तथा मराठा सरदार शिवाजी 306-309
  डॉ. जयश्री रावत, प्रवक्ता, मध्यकालीन इतिहास, जवाहर लाल नेहरू पी.जी. कालेज, बाँसगाव, गोरखपुर
- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में स्त्री-संवेदना 310-313
  डॉ. परेशकुमार पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, का.सु. साकेत पी.जी. कॉलेज, अयोध्या-फैजाबाद
- डॉ. अम्बेडकर और दलित आन्दोलन की दिशा 314-321
  के. प्रमुदित, शोध छात्र, सामाजिक विज्ञान विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- दिव्यांग व्यक्तियों के लिये आयोजित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम 322-324
  मीना कुमारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
- जनपद पौड़ी में विभिन्न पंचायतों के अन्तर्गत वन क्षेत्रों का अध्ययन 325-329
  डॉ. मुकेश कुमार, अतिथि प्रवक्ता, हे.न.ब. गढ़वाल वि.वि. (केंद्रिय वि.वि.) श्रीनगर, उत्तराखण्ड, परिसर-पौड़ी
- आधुनिक संस्कृत नाटककार : प्रो. रामाशीष पाण्डेय 330-335
  राजेश साहा, गवेषक, संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
- बांसडीह तहसील (बलिया जनपद) में साक्षरता स्तर एवं उसका सामाजिक आर्थिक प्रभाव 336-338
  डॉ. सत्य कुमार सिंह, ग्राम+पोस्ट- करम्मर, जिला- बलिया, उ.प्र.
- रसड़ा तहसील (जनपद बलिया) में भूमि उपयोग : एक भौगोलिक अध्ययन 339-341
  डॉ. भूपेन्द्र कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, अमरनाथ मिश्र पी.जी. कालेज, दूबेछपरा, बलिया
- भारत में अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़ावर्ग तथा धार्मिक अल्पसंख्यक समाज का स्वरूप-एक अध्ययन 342-346
  डॉ. हरिओम यादव, पूर्व शोधार्थी, ग्राम+पोस्ट- शीतलपुर, एटा उ.प्र.
  डॉ. शकील अहमद, असिस्टेन्ट प्रोफेसर/अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, जे.एल.एन. कॉलेज, एटा,उ.प्र.
- दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम एवं समावेशी शिक्षा 347-349
  आनन्द मय, पीएच.डी. शोधार्थी, जयपुर नेशनल युनिवर्सिटी, जयपुर (राजस्थान)
  प्रो. कमला वशिष्ठ, निदेशक -शिक्षा विभाग, जयपुर नेशनल युनिवर्सिटी, जयपुर (राजस्थान)
- पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. भीम राव अम्बेडकर के सर्वसमावेशी चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन 350-354
  शैलेष कुमार राम, राजनीति विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
  सन्त लाल भारती, एम.फिल., सबाल्टर्न स्टडीज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के ढांचे का विवेचन 355-360
  अजय वर्मा, शोध छात्र, महामना मदन मोहन मालवीय, हिन्दी पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

दिव्यांग व्यक्तियों के लिये आयोजित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम

मीना कुमारी *

यूनेस्कों ने बाल वर्ष मनाकर प्रत्येक बाल के विकास के प्रति मानवीय संवेदनाओं को प्रकट किया है। इस प्रकार से प्रत्येक बालक को जीने का, विकास करने का समान अधिकार है। कुछ बालकों में जन्म से ही शरीर के किसी न किसी अंग में दोष होता है या बाद में किसी बीमारी, दुर्घटना या आघात के कारण शरीर का कोई अंग सामान्य रुप से कार्य करने में असमर्थ रहता है। ऐसे बालकों को विकलांग बालक कहा जाता है।

क्रो एवं क्रो ने लिखा है कि " एक व्यक्ति जिसमें कोई इस प्रकार का शारीरिक दोष होता है कि जो किसी भी रुप में इसे सामान्य क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है या उसे सीमित रखता है उसकों हम विकलांग (शारीरिक न्यूवता से ग्रस्त) व्यक्ति कह सकते है"।

विकसित देशों में विकलांग बालकों के लिये विशेष विद्यालयों की व्यवस्था है जबकि हमारे देश में विकलांगों के हेय दृष्टि से देखा जाता है। भारतीय समाज ने इसकी प्रारंभ से ही उपेक्षा की है। माता–पिता उनकों अनुपयोगी समझकर उचित व्यवहार नहीं करते हैं। इस प्रकार से उनके अंदर हीन भावना का वास हो जाता है। अतः शिक्षा जगत ने इनके विकास के लिये "विशेष शिक्षा" को जन्म दिया ताकि इनका सही विकास हो सकें।

निःशक्त व्यक्तियों की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य निःशक्त व्यक्तियों को इस योग्य बनाना है कि वे आत्मनिर्भर हो सकें एवं समाज की मुख्य धारा में शामिल होकर किसी भी दिशा में आगे बढ़ सकें। वे सभी सामान्य व्यक्तियों की तरह किसी भी व्यवसाय में दक्ष होकर स्वयं अपनी रोजी–रोटी कमा सकें। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में विकलांगों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं उनकी व्यावसायिक शिक्षा तथा उनके पुनर्वास की दिशा में अनेक प्रयास किये हैं। वर्तमान समय में सरकार तथा अनेक स्वयं सेवी संगठन निःशक्त व्यक्तियों के लिये अनेक प्रकार के व्यावसायिक कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

शारीरिक और मानसिक रुप से अशक्त बच्चों के लिये शैक्षिक सुविधाओं का विकास किया जा रहा है और ऐसे समन्वित कार्यक्रमों का भी विकास किया जा रहा है जिसके द्वारा ये बच्चे नियमित रुप से स्कूलों में अध्ययन प्राप्त कर सकें। साथ ही साथ निःशक्त व्यक्तियों को ध्यान में रखकर सामान्य अनेक सरकारी एवं स्वैच्छिक प्रशिक्षण केन्द्र भी स्थापित हुए हैं। जहां निःशक्त व्यक्ति व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपनी रोजी रोटी कमाने में समक्ष हो सकें। इनकी शिक्षा के लिये मार्गदर्शी सेवाओं को भी विकसित किया जा रहा है। अपंग बालकों की शिक्षा के निमित्त कम से कम बारहवीं तक का विशेष विद्यालय प्रत्येक जिले में स्थापित करने का उद्देश्य है और अभी हाल में उ0प्र0 के मिर्जापुर , सीतापुर और गोरखपुर जिलों में विशेष विद्यालय 10+2 स्तर का विद्यालय स्थापित किया जा रहा है। इस क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों के प्रशिक्षण, शोधकार्य तथा विभिन्न अभिकरणों में तालमेल स्थापित करने की दिशा में भी ध्यान दिया जा रहा है।

हमारे देश में विकलांग बालकों को व्यवसाय तथा रोजगार देने की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने हेतु 100 से अधिक विशिष्ट रोजगार केन्द्र कार्यरत हैं। ये केन्द्र विकलांग बालकों की विशेष शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों को देखकर रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास करते है। प्रमुख रुप से हमारे देश में निम्नलिखित व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र इन निःशक्त व्यक्तियों बालकों के लिये स्थापित किये गये हैं–

1. आई.टी.आई केम्पस नई दिल्ली– 110012।
2. 4, एस.ए. जवाहर नगर जयपुर– 302004 (राज.)।
3. नेपियर टाउन जबलपुर– 482001 (म.प्र.)।
4. ए.टी.आई. केम्पस उद्योग नगर कानपुर–2080022 (उ.प्र.)।

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)